हेरत हेरत आपु हिराना
बूँद मनहु समंद समाना।

देवपाली

25/7/17

INDEX

Name :
Std. : Div. : Roll No. :
Sub. :
School :

Sundaram® Books for Success...

Sr. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.
		कबीर		
		विरह, सुमिरन, गुरुदेव		
		अन्य संत कवि		
		सूफी + जायसी		
		तुलसीदास		
		सुन्दरकाण्ड		
		विनयपत्रिका		
		अयोध्याकाण्ड		
		उत्तरकाण्ड		
		सूरदास		
		भ्रमरगीतसार		
		अन्य कृष्ण भक्त-कवि		
		बिहारी		
		केशवदास		
		पद्माकर		
		घनानंद		
		अन्य		
		सिद्ध, नाथ, हेमचन्द्र, विद्यापति, अमीर खुसरो, चंदबरदायी, रासो		

Scanned by CamScanner

Sr. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.

कबीर

1) लाली मेरे लाल की,
जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मै चली,
मैं भी हो गई लाल॥

2) जल मे कुंभ, कुंभ मे जल
बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना,
इहै तथ कहै गियानी॥

3) जो ऊग्या सो आथवे,
फूल्या सो कुमिलाई

4) रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया,
बूँद पड़े घुलि जाना है॥

5) माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोले,
बोलै मधुरी बानी॥

6) दसरथ सुत तिहुं लोक बखाना
राम नाम का मरम है आना।

7) सात समंद की मसि करौं,
लेखनी सब बनराई।
धरती सब कागद करौं
हरिगुण लिखा न जाई॥

9) संतो धोखा
कासू कहिए।
गुन में निरगुन
निरगुन में गुन
बाट छाडि
क्यों बहिए

8) निरगुन राम जपहुँ रे भाई।
अविगत की गति लखि न जाई॥

10) मेरा मुझमें कुछ नहीं,
जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते,
क्या लागत है मोर॥

11) हरि मेरा पीउ, मैं हरि की बहुरिया।

12) दुलहिन गावहु मंगलचार,
हम घरि आए राजा राम भरतार॥

13) बालम आओ हमारे गेह रे।
तुम बिनु दुखिया देह रे॥

14) जो बिछुड़े हैं पियारे से,
भटकते दर-बदर फिरते।
हमारा यार है हममें,
हमन को इन्तजारी क्या॥

15) तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहिं चैन, रात नहिं निंदिया,
तलफ-तलफ के भोर किया।

16) मन मस्त हुआ तब क्यों बोले।
मेरा साहब है घर माहीं;
बाहर नैना क्यों खोले॥

17) नैनों की करि कोठरी,
पुतरी पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि कें।
पिय को लिया रिझाय॥

18) हारों तो हरिनाम है,
जो जीतूँ तो दाँव।
पारब्रह्म सो खेलता,
जो सर जाव तो जाव॥

19) जब मैं था तब हरि नहिं,
अब हरि है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी,
तामे दो न समाई॥

20) कबीर यह घर प्रेम का,
खाला का घर नाहिं।
शीश उतारे हाथ करे,
सो पैसे घर माहिं॥

21) प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय
राजा प्रजा जेहि रुचै, शीस देहि लै जाय

22) पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा,
पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय॥

23) कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ
गले राम की जेवड़ी, जित खेंचै तित जाऊँ

24) पकरी टेक कबीर भगति की,
काजी रहे झख मारि।

24) हरि जननी मैं बालक तेरा

24) सदगुरु है रंगरेज,
चुनर मोरि रंग डारी॥

25) काँकर पाथर जोरि के, मसजिद लई बनाया
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।

26) अवधू गगनमंडल घर कीजै,
अमृत झरै सदा सुख उपजै,
बंकनाली रस पीजै।

27) गगन पवन दोनो बिनसें,
कहाँ गया जोग तुम्हारा

28) पाहन पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते वा चाकी भली, पिसि खाए संसार॥

30) मूँड मुँडाए हरि मिलें,
सब कोई लै मुँड़ाय।
बार-बार के मुँड़ते,
भेड़ न बैकुण्ठ जाय॥

31) माला फेरत जुग गया,
मिटा न मन का फेर।
कर का मन का डारि दे।
मन का मनका फेर॥

33) जो तू बाम्हन बम्हनी का जाया,
आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया?

34) जो तू तुर्क तुरकनी का जाया,
भीतर खतना क्यों न कराया।

35) जाति पाति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे, सो हरि का होई॥

---

36) अरे इन दोउन राह न पाई
हिन्दुन की हिन्दुआई देखी
तुरकन की तुरकाई

37) हिन्दु कहें राम हमारा
मुसलमान रहमाना
आपस में दोउ लरे मरत है
मरम कोउ न जाना

---

38) हम घर जारा आपना,
लिया मुराड़ा हाथ,
अब घर जारों तासु का,
जो चले हमारे साथ॥

39) माया मुई न मन मुवा,
मरि मरि गया सरीर।
आसा तृस्ना ना मुई,
यों कहि गया कबीर॥

40) साईं के सब जीव हैं,
कीरी कुंजर दोऊ।

41) बकरी पाति खात है, ताकि काढ़ि खाल।
जो नर बकरी खात है, ताके कौन हवाल॥

42) बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोज आपना,
मुझसा बुरा न कोय॥

43) साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय

44) कल करै सो आज कर,
आज करै सो अब्ब।
पल मे परलय होयगी,
बहुरि करैगो कब्ब॥

45) ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥

---

46) सुखिया सब संसार है, खावे अरु सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवे॥

47) चलती चाकी देख कर,
दीया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में,
साबुत बचा न कोय॥

48) मैं कहता आँखिन की देखी।
तू कहता कागद की लेखि॥

54) संतों आई ज्ञान की आँधी रे।

49) संस्किरत है कूपजल,
भाखा बहता नीर।

50) जो तुम जान्यों गीत है,
वह निज ब्रह्म-विचार।

51) मसि कागद छुऔं नहिं,
कलम गहि नहिं हाथ।

52) नैया बिच नदिया डूबती जाय।
(ज्ञान) (विषय-वासना)

53) कबीरदास की उल्टी बानी।
बरसै कम्बल, भीजै पानी॥

53) समन्दर लागी आगि (मूलाधार)
नदियाँ जल कोयला भई (इड़ा, पिंगला नाड़ियाँ भस्म)

विरह

1) सब रग तंत रबाब तन,
विरह बजावै नित्त।
और न कोई सुनि सकै,
के साईं के चित्त॥

2) विरहा बुरहा जिनि कहौ,
विरहा है सुलतान।
जा घट विरह न संचरै,
ते घट सदा मसान।

3) अँखियन ते झाँई पड़ि, पंथ निहारि-निहारी।
जिभ्या ते छाला पड़ा, राम पुकारि पुकारि॥

4) हँसि-हँसि कन्त न पाइए,
जिनि पाया तिनि रोई।

5) सुखिया सब संसार है

सुमिरन

1) कबीर प्रेम न चाखिया,
चखि न लिया साव।
सूने घर का पाहुनाँ,
ज्यूँ आया त्यूँ जाव॥

2) तूँ तूँ करता तू भया,
मुझ में रही न हूँ।

3) कबीर सुमिरन सार है,
और सकल जंजाल।
आदि अन्त सब सोधिया,
दूजा देखौं काल॥

4) लूटी सके तो लूटियो,
राम नाम है लूटि।

गुरुदेव

1) सतगुरु की महिमा अनंत,
अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया,
अनंत दिखावनहार॥

2) माया दीपक नर पतंग,
भ्रमि-भ्रमि पड़ै इवंत।
कहै कबीर गुरु ग्यान तैं,
एक आध उबरंत॥

3) पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथी।
आगे ते सद्गुरु मिल्या, दीपक दीया हाथी॥

4) दीपक दीया तेल भरि, बाति दई अघट्ट।
पूरा किया बिसहुना, बहुरि न आवौं हट्ट॥

5) बरस्या बादर प्रेम का भीगि गयो सब अंग

अन्य सन्त

1) जाति ओछा पाति ओछा,
ओछा जनमु हमारा।
रामराज की सेवा कीन्ही,
कहे रविदास चमारा॥

2) प्रभुजी तुम चंदन हम पानी,
जाकी अंग अंग बास समानी
— रैदास

3) दादु पद जोड़े क्या पाइये,
साखी कहैं का होइ।
सति सिरोमनी साइयाँ,
तत न चीन्हा कोई॥
— दादू दयाल

सूफी

1) मानुष प्रेम भयेउ बैकुंठी,
नाहि ते काह छार एक मूंठी।

2) प्रेम पहार कठिन विधि गढ़ा,
सो पै चढ़ै सीस जो चढ़ा।

3) मरै तो मरौं, जिऔं एक साथा।

4) सुनि संदेस राजा तब हँसा
प्रान प्रान घट घट महँ बसा।

5) प्रीति अकेली बेलि चढ़ छावा,
दूसर बेल न संचरै पावा।

6) हौं रानी, तुम जोगी भिखारी।
जोगिहि भोगिहि, कौन चीन्हारी॥

---

1) ना हौं सरग क चाहूँ राजू
ना मोहि नरक सेति किछु काजू
चाहौं ओहिकर दरसन पावा

---

2) यह तन जारौं छार कै
कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै
कन्त धरै जहँ पाव

2) जेठ जरै जग, बहै लुवारा,
उठै बवंडर धिकै पहारा।
चारिहु पवन झकोरे आगि,
लंका ~~[illegible]~~ दाहि, पलंका लागि॥

3) बरसै मघा झकोरि झकोरि,
मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरि।

4) पिउ सो कहेहु सँदेसड़ा,
हे भौंरा हे काग।
सो धनि बिरहै जरि मुई,
तेहिक धुआँ हमहिं लाग॥

5) पुष्य नखत सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाह मंदिर को छावा॥

6) दहि कोयला भइ कन्त सनेहा,
तोला माँसु रहा नहिं देहा।
रकत न रहा बिरह तन जरा।

---

1) मुहमद कवि यह जोरि सुनावा,
सुना सो पीर प्रेम कर पावा।
जोड़ि लाइ रकत कै लेई,
गाढ़ि प्रीति नयनन्ह जल भेई।

Scanned by CamScanner

2) मुहम्मद कवि जो प्रेम का,
ना तन रकत न माँसु।
जेहि मुँह देखा तेहि हँसा,
सुना तो आए आँसु॥

3) कोइ न रहा जग, रही कहानी

4) धनि सो पुरुष जस कीरति जासु,
फूल मरै पै मरै न बासु।

5) कोई न जगत जस बेचा,
कोई न लीन्ह जस मोल।

---

1) जेहि दिन दसन ज्योति निरमई,
बहुतै ज्योति ज्योति ओहि भई।
रवि ससि नखत दीप तेहि ज्योति,
रतन पदारथ मानिक मोती॥

1) शुक सुआ जेहि पंथ दिखावा

2) पदमिनी गवन हंस गए दूरि।
कुंजर लाज मेलि सिर धूरि॥

3) गढ़ तस बाँक, जैसी तोरि काया।
पुरुष देखु ओहि कै छाया।
दसवँ दुआर ताल कै लेखा।
उलटी दिस्टि जो लाव सो देखा॥

4) तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल बुधि पदमिनी चीन्हा॥

---

1) ऐ रानी मन देखु बिचारी।
एहि नैहर रहना दिन चारी।
सासु ननद बोलिन्ह जेति केही।
दारुन ससुर न निसरै देही॥

2) पानी भरै आवहिं पनिहारी।
रूप सरूप पदमिनी रानी॥ नारी

3) पद्मावती कहँ दुख तस बीता। उपमा
जस अशोक बीरो तन सीता॥

---

1) रतन छुवा जिन्ह हाथन्ह सेंती।
और न छुवौं सो हाथ सँकेती॥

5) बुधि अँगुरी न निकसैं डीठ

6) हिय फटा

7) केत खिलार हारि तेहि पासा

8) पुनि सिंगार हाट भल दसा।

9) राजै बीरा दीन्ह नहिं जाना। बिसवास

1) यह बाँसुरी सुनै सो कोई।
हिरदय स्रोत खुला जेहि होई।।
— अनुराग बाँसुरी, नूर मुहम्मद

2) चार दिना की चाँदनी,
फिर अँधियारा पाख
— मसलनामा, जायसी

तुलसीदास

कलियुग

1) निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी।
कलिजुग सोई ग्यानी सो बैरागी।
जाके नख अरु जटा बिसाला।
सोई तापस प्रसिद्ध कलिकाला।

2) साम न दाम न भेद कलि,
केवल दण्ड कराल।

3) विप्र निरच्छर लोलुप कामी।
निराचार सठ वृषली स्वामी।

4) कलि बारहिं बार दुकाल परै।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।

5) खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि।
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविकाविहीन लोग, सीद्यमान सोचबस।
कहै एक एकन सो, कहाँ जाई का करी।

---

6) दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबंधु।
दुरित दहन देखि, तुलसी हहा करी।

7) ऊँचाई बुझाई, एक स्याम घनस्याम ही ते।
आगि बड़वागि ते, बड़ी है आगि पेट की।

8) नहिं दरिद्र सम दुख जग माहिं।
(उद्धरण)

9) भूमि सप्त सागर मेखला।
एक भूप रघुपति कोसला।

10) दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज काहुहिं नहिं व्यापा।

11) अल्पमृत्यु नहिं कवनउँ पीरा,
सब सुन्दर सब बीरुज सरीरा।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना,
न कोउ अबुध न लच्छनहीना।

12) जौं अनीति कछु भाषौं भाई
तौ मोहिं बरजहु भय बिसराई

13) एक नारिव्रत रत सब झारी।
ते मन बच क्रम पति हितकारी।

14) सब उदार, सब परउपकारी।

15) ~~[illegible]~~ भए सब साधु किरात किरातिनी
रामदरस मिटि गई कलुषाई

16) सोई ~~[illegible]~~ अतिसय प्रिय भामिनी मोरे।
सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे॥

17) कत बिधि सृजि नारी जग माहिं।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं।

18) राम-भगति रत नर अरु नारि।
सकल परमगति के अधिकारी॥

19) धूत कहौ अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब,
काहू की जाति बिगार न सोऊ
× × ×
माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो
लैबो एक न देबे को दोऊ

20) मेरी जाति पाँति न चहौं काहू की
जाति पाँति।
मेरे कोऊ काम को न हौं काहू के
काम को।

21) जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवसि नरक अधिकारी

२२) मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पाले पोसे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।

२३) परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

२४) बिमल बंस यह अनुचित एकू।
बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिसेकू।।

२५) राम सो बड़ो है कौन
मोसो कौन छोटो
राम सो खरो है कौन
मोसो कौन खोटो

२६) जिन्ह हरिकथा सुनि नहिं कथा
श्रवन रंध्र अहिभवन समाना

२७) जो नहिं करे राम गुन गाना
जीह सो दादुर जीह समाना

२८) जब जब होय धरम कै हानि
बाढ़े असुर अधम अभिमानी
तब तब प्रभु धरि बिविध सरीरा
हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा

२९) अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा
अकथ अगाध अनादि अनूपा

३०) शिव द्रोही मम दास कहावा
सो नर मोहि सपनेहु नहिं भावा

३१) करम प्रधान विस्व करि राखा
जो जस करइ, सो तस फल पावा

३२) होई है सोई जो राम रचि राखा
को करि तर्क बढ़ावें साखा

३३) तुलसी घर बन बीच ही
राम प्रेम पुर छाई

३४) सूधे मन सूधे बचन
सूधी सब करतूती
तुलसी सूधी सकल बिधि
रघुबर प्रेम प्रसूति

३५) गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग

36) सेवहिं सकन्हि माझ मंद नाहीं
37) राम भरतु दोउ भ्रात सम जानी

---

38) ईश्वर अंश जीव अविनाशी
39) परमात्मा ब्रह्म नर रूपा
होइहिं रघुकुल भूषन भूपा
40) ज्ञान के पंथ, कृपान के धारा

---

41) दामिनी दमक रही घन माहिं
खल की प्रीति यथा थिर नाहिं

---

42) कवि न होऊँ नहि वचन प्रवीनू
सकल कला सब विद्या हीनू
43) भाषा बद्ध करिबे मैं सोई
मोरे मन प्रबोध जेहि होई
44) का भाषा का संस्कृत
प्रेम चाहिए साँच
काम जो आवे कामरि
का लै करिअ कुमाच
45) कीरति भनिति भूत भलि सोई
सुरसरि सम सब कर हित होई

46) कहि कहि कोटिक कपट कहानी
47) कटकटिहिं मर्कट बिकट भट
बहु कोटि कोटिन्ह धावहिं
48) चरन चाट चटकन चकाट
49) कन्दर्प दर्प दुर्गम दावन
50) तुलसी पावस के समय,
धरि कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बोलिहैं,
हमहिं पूछिहैं कौन।।
51) राम कहत चलु, राम कहत चलु
राम कहत चलु, भाई रे।
52) लोचन जलु रह लोचन कोना।
जैसे परम कृपन कर सोना।।
53) राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार।।
54) सब उपमा कवि रहे जुठारी।
केहि पटतरों बिदेह कुमारी।।

55) कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसि पा तुलसी की कला।

56) नव तुरु किसलय मनहुँ कृसानु।

57) जिमि अमोघ रघुपति कर बाना।
तेहिं भाँति चलेहु हनुमाना॥

58) राम को रूप निहारति जानकी।
कंगन के नग की परछाहीं॥

59) सचिव वैद गुरु तीनि जौं
भय लोल

सुन्दरकाण्ड

59) Imp सचिव बैद गुरु तीनि जो
प्रिय बोलहिं भय आस
राज धर्म तन तीनि कर
होई बेगहिं नास

Important

60) तजि मद मोह कपट छल नाना।
करउँ सदय तेहि साधु समाना॥

61) जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

62) काम क्रोध मद मोह सब,
नाथ नरक के पंथ।

63) जे हित रहे करत तेई पीरा

64) तात राम नहिं नर भूपाला
भुवनेश्वर कालहु कर काला

65) नाथ न कछु मोरि प्रभुताई

66) कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई
जब तव सुमिरन भजन न होई

67) अवगुन एक मोर मैं माना।
बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना॥
नाथ सो नयनन्ह हिं अपराधा।
निसरत प्रान करहिं हठि बाधा॥

68) कलिमल ग्रसित दास तुलसी को, (विनयपत्रिका)
काहे कृपा बिसारि।

69) कहाँ जाऊँ कासे कहूँ को सुनै दीन की।

Scanned by CamScanner

सूरदास

1) मेरी कौन गति ब्रजनाथ

2) वेद उपनिषद जासु को,
निरगुनहि बतावै।।
भक्तवछल भगवान धरै तन
भक्तनि के पास ।।

3) करि गोपाल की सब होई।
जो अपनो पुरुसारथ मानत,
बड़ो झूठो है सोई।।

4) भक्त पंथ को जो अनुसरै,
सो साष्टांग जोग को करै।

5) सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत, रेनु तन मंडित,
मुख दधि लेप किए।

6) जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलरावै जोई सोई कछु गावै।

7) मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई।
यह अबहूँ है छोटी।।

8) मैया मोहे दाउ बहुत ही खिझायो।

9) नंद ब्रज लीजै ठोकि बजाय

10) सूल होत नवनीत देखि मेरे,
मोहन के मुख जोग।

11) छबीले मुरली नेंकु बजाउं

12) खेलन में को काके गुसैंय्या
हरि हारे जीते सुदामा,
बरबस ही कत करत रिसैय्या।

13) चरावत वृन्दावन हरि धेनु

14) भए हरि मधुपुरी राजा
बड़े बंस कहाय।
राजभूषन अंग भ्राजत
अहीर कहत लजाय।।

15) खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी
औचक ही देखि तहँ राधा
नैन बिसाल भाल दिए रोरी
सूर स्याम बूझत ही राझे
नैन नैन मिलि परि ठगोरी

16) बूझत स्याम कौन तो गोरी
कहाँ रहति काकी तू बेटी

17) धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ि
एक धार दोहनि पहुँचावत
एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी

18) गुन आगर अरु रस सागर श्री
मानत सुख व्यवहार

19) सेस महेस गनेस
सुकादिक
नारदादि की स्वामिनी

20) दुलहिनि दुलहा स्यामा स्याम

21) अतिमलीन वृषभानुकुमारी
हरि स्रमजल अंतरतन भीजे
ता लालच न धुवावति सारी

22) निसिदिन बरसत नैन हमारे | भ्रमरगीतसार
सदा रहति पावस रितु हम पै
जब तैं स्याम सिधारे

23) अखियाँ हरि दरसन की भूखी
कैसे रहैं रूप रस राँची
ये बतियाँ सुनि रूखी

24) लोचन जल कागद मसि मिलि कै।
ह्वै गई स्याम स्याम की पाति॥

25) आपुन केलि करत कुब्जा संग
हमहिं सिखावत जोग।

26) मधुबन तुम कत रहत हरे।
तुम हो निलज, लाज नहीं तुमको
फिरि फिरि पुहुप धरे।

27) उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसेहूँ निकसति नाहिं,
तिरछे ह्वै जू अड़े।

28) ऊधो मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयो स्याम संग
को अवराधै ईस

29) बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजें,
तब यह लता लगती अति सीतल।
अब भई भीषन ज्वाल की कुंजें॥

30) अति कुसगात भई है तुम बिन
बहुत दुखारी गाय

31) ऊधो कोकिल कूजत कानन
तुम हमको अदेस करत हो
भस्म लगावत आनन

32) ऊधो जाके माथे भाग
कुब्जा को पटरानी कीनो
हमहिं देत बैराग

33) हम तो दुहु भाँति फल पायो
इक हरि मिलैं तो कीर्त्ती
नातक जग जस गायौं

34) ऊधो विरहौ प्रेम करौ

42) हमारे हरि हारिल की लकरी

35) स्यार्है लाख धरौ दस कुबरी
अंतहि कान्ह हमारे

36) जहँ जहँ रहौं राज करौं
तहँ तहँ लेहु कोटि सिर भार

37) लरकाई को प्रेम, कहौ अलि कैसे छूटे।

38) रेख न रूप न बरन जाके नहीं
ताको हमें बतावत
अपनी कहौ दरस ऐसे को
तुम कबहुँ हो पावत

39) निर्गुन कौन देस को बासी।
मधुकर हँसि समुझाय,
सौंह दे, बूझति साँच न हाँसि
को है जनक जननी को कहियत
को नारि को दासी

40) काहे को रोकत मारग सूधो,
सुनहु मधुप निरगुन कंटक तें
राजपंथ क्यों रूँधो

41) दाख छाँडि़के कटुक निबौरि
के अपने मुँह लैहै।
जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहैं

43) हरि है राजनीति पढ़ि आए।
इक अति चतुर हुते पहले ही,
अरु करि नेह दिखाए।
जानि बुद्धि बढ़ी जुवतिन को,
जोग सन्देस पठाए।

44) राजधर्म सब भए सूर
जहाँ प्रजा न जाएँ सताएँ

45) सूरदास ऐसे क्यों निबहै
अँधाधुंध सरकार

46) राजनीति की नीति सुनों हो
चरित वाकिचर खेत

47) वह मथुरा काजर की कोठरी
जे आवहिं ते कारे।
तुम कारे सुफलकसुत कारे,
कारे मधुप भँवारे।

---

48) आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादी खेप गुन ग्यान जोग की
ब्रज में आन उतारी

49) आयो जोग लिए व्यापक प्रौढ़

50) ऊधो भली करि तुम आए
×××
या दुख में ब्रज के लोग हँसाए
(तिरस्कार)

51) अब अति पंगु भयो मन मेरो
गयो तहां निरगुन कहिबे को
भयो सगुन के चेरो

52) ऊधो पा लागों तुम आए
तुम देखे जनु माधव देखे
तुम त्रय ताप नसाए

---

53) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै,
जैसे उड़ि जहाज के पंछी,
फुनि जहाज पै आवै।

54) हरि कर राजत माखन रोटी
मनो वराह भूधर सह पृथ्वी
हरि दसनन की कोटि

55) बिनु पावस पावस ऋतु आई
देखत हैं बिदमान,
अब धौं कहा किया चाहत हैं,
छाँड़हुँ नीरस ज्ञान

Imp

(ठिठोली)

अन्य कृष्णभक्त कवि

1) सन्तन को कहाँ सीकरी सो काम
आवत जात पन्हैया टूटी
बिसरि गयो हरि नाम (कुंभनदास)

2) सुर काहे छिपियात है (वल्लभ)

3) जो उनके गुन नाहिं,
और गुन भए कहाँ तें।
बीज बिना तरु उपजै भोरि
तुम कहो कहाँ तें (नंददास)

4) पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे
मैं तो अपणे नारायण की
आपहि होगई दासी रे
लोग कहैं मीरा भई बावरी (मीरा)
न्यात कहै कुलनासी रे

5) मोहन वह क्यों प्रीति बिसारि
कहत सुनत समुझत उर अंतर
दुख लागत है भारी (परमानंददास)

6) या मुरली मुरलीधर की
अधरान धरि अधरा न धरौंगी
(रसखान)

बिहारी

1) तंत्रीनाद कवित्त रस,
सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे,
जे बूड़े सब अंग।।

2) अंग अंग नग जगमगति,
दीपसिखा सी देह।
दीया बुझाए ह्वै रहै,
बड़ो उजेरो गेह।।

3) पतरा ही तिथि पाइए, वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौंहि रहै, आनन ओप उजास।।

3) अपने अंग के जानिकै, जोबन नृपति प्रबीन
स्तन मन नैन नितंब को, बड़ो इजाफा कीन।।

4) गदराने तन गोरटी, ऐपन आड़ लिलार।
हूठ्यौ दै इठलाइ दृग, करै गँवारि सुमार।।

5) रससिंगार मंजनु किए, कंजनु भंजनु दैन।
अंजनु रंजनु हूँ बिना, खंजनु गंजनु नैन।।

6) कहत नटत रीझत खीझत,
मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं,
नयनन ही सों बात।।

Scanned by CamScanner

7) बतरस लालच लाल की,
मुरली धरि लुकाई।
सौंह करै भौंहनु हँसै देन कहै
नट जाई॥

8) मैं तोसौं कैवा कह्यौ,
जो तू इन्हें पताई।
लागालागि लोइननु,
उर में लाइ-लाइ॥

9) कागद पर लिखत न बनत,
कहत संदेसु लजात।
कहिहैं सब तेरौ हिय,
मेरो हिय की बात॥

10) इत आवत चलि जात उत,
चली छ सातक हाथ।
चढ़ि हिंडोरैं सी रहै,
लगी उसासनि साथ॥

11) लपट बुझावत बिरह की,
कपट भरेउ आई।

12) बारी बारी आपनि सींची
सुहृदता बारि।

13) अज्यौं तरयौना हि रह्यौ,
श्रुति सेवत इक रंग।
नाक बास बेसरि लह्यौ,
बसि मुकुतनु के संग॥

14) कनक कनक ते सौ गुनि,
मादकता अधिकाय।
या खाए बौराए नर,
वा पाए बौराय॥

15) दीरघ साँस न लेहि दुख,
सुख साईंहि न भूल।

16) जप माला छापा तिलक,
सरै न एकौ काम।
मन काँचै नाचै वृथा,
साँचै राँचै राम।

17) चित पितुमारक जोग गुनि
भयो भये सुत सोग।
फिर हुलस्यौ जिय जोइसी,
समुझें जारज जोग॥

१८) स्वारथ सुकृत न श्रमु वृथा,
देखि बिहंग बिचारि।
बाज पराये पानि परि,
तू पच्छीनु न मारि॥

१९) नहिं पराग नहिं मधुर मधु,
नहिं विकास इहि काल।
अलि कलि ही सौं बंध्यौ,
आगे कौन हवाल॥

२०) कहति न देवर की ~~कुबत~~ कुमति
कुलतिय कलह डराति।
पंजर गत मंजार ढिग,
सुक लौं सूकति जाति॥

२१) मेरी भव बाधा हरौ,
राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परत,
स्याम हरित दुति होइ॥

२२) या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जल होय॥

२३) बंधु भए का दीन के, को तार्यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठे बिरुद कहाइ॥

२४) रनित भृंग घंटावली,
झरित दान मधु नीको।
मंद मंद आवतु चल्यौ,
कुंजर कुंज समीरु॥

२५) देखि दुपहरि जेठ की,
छाँहौं चाहति छाँह।

२६) सनि कज्जल चख झख लगन
उपज्यौ सुदिन सनेहु
क्यों न नृपति ह्वै भोगवै
लहि सुदेसु सब देहु

२७) मंगलु बिंदु सुरंगु मुखु ससि,
केसरि आड़ गुरु।
एक नारि लहि संगु,
रसमय किय लोचन जगत।

२८) नेहु न नैननु को, कछु उपजि बड़ी बलाय।
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय

२९)

3) चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर

3) रहति न रन जयसाहि मुख लखि, लाखनु की फौज।

3) सतसइया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर

केशवदास | काव्यांश

1) मातु कहाँ नृपतात?
गए सुरलोकहि।
क्यों ?
सुत शोक लहि।

2) भाषा बोलि न जानहिं, जिनके कुल के दास
भाषा कवि भो मंदमति, तेहि कुल केशवदास

3) चढ़्यो गगन तरु धाय,
दिनकर वानर अरुण मुख।

4) जदपि सुजाति सुलच्छनि,
सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन बिनु न बिराजई,
कविता वनिता मित्त॥

5) राम को काम कहा, रिपु जीतहिं।
कौन कबै रिपु जीत्यों कहाँ है।

6) सी। धी। री। धौं।
राम नाम सत्य धाम।

7) शरण सो। तरणिजा सुखकन्द है।
रघुनंद जू।
जग यूँ कहै।
जगबंद जू।

Scanned by CamScanner

पद्माकर

1) गुलगुली गिल मे गलीचा हैं,
गुनीजन हैं चाँदनी है,
चिक हैं चिरागन की माला है।
कहै पद्माकर ज्यों गजक गिजा है सजी,
सेज हैं सुराही हैं,
सुरा है और प्याला है।

2) या अनुराग की फाग लखौं,
जहँ राजत राग किसोर किसोरी।
गोरिन के संग भीजिगो साँवरो,
साँवरे के संग भीजिगो गोरी।

3) पावस बनाओ तो विरह न बनाओ।
जो विरह बनाओ तो पावस न बनाओ।।

4) या जगजीवन को है यह फल,
जो छल छाँड़ि भजे रघुराई।

5) संपति कुबेर की सुमेर की, जो पावें ताहि।
तुरत लुटावत विलंब उर धारे ना।

6) अपकनि तपकनि धड़कनि महाई/ प्रलय चिलिकन से भड़कनि जहाँ है

घनानंद

1) लोग हैं लागि कवित्त बनावत,
मोहे तो मोरे कवित्त बनावत।

2) अति सूधो सनेह को मारग है,
जहँ नेकु सयानप बाँक नहिं।

3) तुम कौन धौं पाटि पढ़े हो लला,
मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।

4) उजरनि बसि है हमारि अँखियानि देखौ

5) रावरे रूप अगाधे राधे, राधे राधे राधे
तेरी मिलिबे को ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे।।

6) दोऊ जियो न छियो घन-आनंद
कॉवरे अंग सुजान वधू के

अन्य

1) केते मारि डारे, और केतक चबाइ डारे।
केतक बगाइ डारे, काली कोपी तबहिं॥

2) सवा लाख से एक लड़ाऊँ
चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ,
तो गोविंद सिंह नाम कहाऊँ

3) तेज तम अंश पर
कान्ह जिमि कंस पर
त्यों म्लेच्छ वंश पर
सेर सिवराज है।

4) रीति सुभाषा कवित्त की,
बरनत बुध अनुसार। (चिन्तामणि)

5) काव्य की रीति सिखी सुकवीन सों
(भिखारीदास)

6) अपनी-अपनी रीति के काव्य,
और कवि रीति (देव)

7) डेल सो बनाय आय,
मेलत सभा के बीच।
लोग कवित्त कीबो,
खेल करि जानो है।

8) अपनी पहुँच विचारि कैं,
करतब करिए दौड़,
तेते पाँव पसारिए,
जेती लम्बी सौर॥

9) सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात
ज्यों ज्यों खरचें त्यों बढ़ें,
बिनु खरचें घटि जात।

10) सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन बढ़ावत आग को, दीपहिं देत बुझाय

---

11) जात हमारी ब्रह्म है
मात पिता हैं राम
गिरह हमारा सुन्न है
अनहद में बिसराम

12) नारी जननी जगत की,
पाल पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर,
ताहि लगावत दोष॥

13) भरि रहे भनक भनक
तार तानिनि की
तमक तमक तामें झमक
चुनीन की।

८. सिद्ध० साहित्य

1) पंडिअ सअल सत्य वक्खाणइ,
देहहिँ बुद्ध बसन्त ण जाणअ।

२) आगम वेअ पुराणेहि पण्डिअ माण वहंति।
पक्क सिरिफले अलिअ जिम बाहेरिअ भमंति॥

३) जहि मण पवण न संचरइ,
रवि ससि णाह पवेस।
ताहि वट चित्त विसाम करु,
सरहे कहहु उवेस॥

4) नाद न बिन्दु न शशि न मंडल,
चिअराअ सहावे मूकल॥

5)

नाथ साहित्य

1) हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा,
धीरे धरिबा पाँव।
गरब न करिबा सहजे रहिबा,
भणंत गोरख राव॥

2) नौ लख पातरि आगे नाचै,
पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसो मन लै जोगी खेलै,
तब अंतरि बसै भंडारा॥ — गोरखनाथ

3) जोगी सोई जाणिए,
जग ते रहे उदास॥
(मत्स्येन्द्रनाथ)

4) चेले से हुआ लाभ होएगा,
गुरु होइओ आजि॥
(चर्पटीनाथ)

5) नाथ बोलैं अमृतवाणी,
बरसैगी कमली भीजेगा पाणी।

हेमचन्द्र

1) मग्ग विआहिअ जहि लोहइँ
पिय ताहि देसहिं जाऊँ।

2) सिरि जरखंडी लोअडी
गलि मणियडा न वीस।

3) भल्ला हुआ जु मारिया,
बहिणी म्हारा कन्तु।
लज्जेजं तु वयंसिअहु,
जइ भग्गा घरु एन्तु॥

विद्यापति

1) जहँ जहँ झलकत अंग,
तहँ तहँ बीजुरि तरंग।

2) सैसव जौवन दुइ मिलि गेल।
स्रवनक पथ दुहु लोचन लेल॥

3) ए सखि देखल एक अपरूप
सुनइत मानवि सपन सरूप

4) माधव बोलत मधुरी बानी

प्रेमक हे कुदरनि अनुभव गाये।
जनम अवधि भर रूप निहारल,
नयन न तिरपति भेल।

6) राहि रहल दूर हम मथुरापुर
एतहु सहाए परान

7) कामिनी करए सनाने,
हेरितहि हृदय हनए पचवाने।

8) सक्कय वाणि बुहजण भावइ,
पाउअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल वयणा सब जन मिट्ठा,
तं तैं सण जंपओ अवहट्टा॥
मागधी

9) बालचंद विज्जावइ भासा,
दुहु नहिं लागत दुज्जन हासा।

10) हिन्दू तुरुक मिलल वास
एकक धम्मे ओकाक वास
कतहु बांग कतहुं वेद
कतहुं बिस्मिल कतहुं छेद

11) जय जय भैरवि असुर भयाउनि।

12) बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।

13)

अमीर खुसरो

1) एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाल फिरे,
मोती उससे एक न गिरे॥

2) पान क्यों सड़ा?
घोड़ा क्यों अड़ा?
फेरा न था।

3) सेज सोके सिंगार करावत,
आगे बैठके मान बढ़ावत।
वाके चिक्कन न कोउ दीसा,
ऐ सखि साजन! न सखि सीसा।

4) खीर बनाई जतन से, चरखा दिया चलाय।
आकर कुत्ता खा गया, बैठि ढोल बजाय॥

5) काहे को बियाहे परदेस
सुन बाबुल मोरे।
मैं तो हूँ बाबुल,
तेरे खूँटे की गैया।
हाँकी-हूँकी जाऊँ परदेस!

6) जे हाल मिसकीं मुकुन-तगाफुल,
दुराय नैना बनाए बतियाँ।
कि ताबे हिज्रा न दारम ए जा,
न लेहु काहे लगाए छतिया।

7) उज्जल बरन अधीन तन,
एक चित्त दो ध्यान।
देखत में तो साधु है,
निपट पाप की खान॥

8) छाप तिलक सब छीनी,
मोसे नैना मिलाई के।

9) खुसरो रैन सुहाग की,
मैं तो जागी पी के संग।
तन मेरो मन पिउ को,
दोउ भए एक रंग॥

10) गोरी सोवे सेज पर,
मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने,
रैन भई चहुँ देस।

11) खुसरो दरिया प्रेम का,
उलटी वाकि धार।
जो उतरा सो डूब गया,
जो डूबा सो पार॥

Scanned by CamScanner

चंद बरदायी

1) निराधार आधार करतार तू ही।

2) उक्ति धर्म विशालस्य,
राजनीति नवं रसः।
षटभाषा पुरानं च
कुरानं कथितं मया॥

3) वज्जिय घोर निसान

उदति राज प्रथीराज,
बाग मनो वीर नट।
कढ़त तेग मनवेग लगत,
मनो बीज झट्ट घट॥

4) चार बाँस चौबीस गज
अष्ट अंगुल प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है,
मत चूकौ चौहान॥

5) गासाउ अग्गं कु भावरस भास
छंदु चन्दु किस अखिअ सख

6)

रासो काव्य

1) अरर अरर अर गोली बरसें
करें अग्निया बान

2) बारह बरस लों कूकर जिए,
और तेरह लों जिए सियार।
बरस अठारह छत्रिय जिए,
आगे जीवन को धिक्कार।

Scanned by CamScanner